BA Part II(I)
Paper IV

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College RajNagar

अनुसूची के दोष (Demerits of Schedule) → अनेक गुणों के पश्चात भी अनुसूची प्रविधि की अपनी कुछ सीमाएं हैं जिनके कारण सभी प्रकार के अध्ययनों में इसका प्रयोग उपयोगी नहीं होता। अनुसूची की इन सीमाओं अथवा दोषों को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

1) सर्वभौमिक प्रश्नों की समस्या - सर्वभौमिक प्रश्नों का तात्पर्य ऐसे प्रश्नों से है जिनको सभी उत्तरदाता एकसमान अर्थ समझें तथा उनका सही रूप से उत्तर दें। साधारणतया ऐसे प्रश्नों का निर्माण का सृजना बहुत कठिन कार्य होता है। सभी प्रकार की सावधानियां रखने के बाद भी कुछ प्रश्न अनेक व्यक्तियों के लिए आकर्षक हो सकते हैं जबकि अनेक उत्तरदाता उन्हीं प्रश्नों को अपने व्यक्तिगत रूप आक्षेप समझ सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं की शैक्षणिक बौद्धिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी एक दूसरे के समान नहीं होती। इस स्थिति में सभी उत्तरदाताओं से समान प्रश्नों के द्वारा उपयोगी सूचनाएं प्राप्त करना कठिन हो जाता है। यदि विभिन्न स्तर के व्यक्तियों के लिए पृथक-पृथक अनुसूचियां बनायी जायें तो तथ्यों का वर्गीकरण और सारणीयन करना अत्यधिक कठिन हो जाता है।

2) सम्पर्क की समस्या → वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन इतना व्यस्त है कि वह निःस्वार्थ रूप से किसी को भी अपना समय देना नहीं चाहता, इस स्थिति में अध्ययनकर्ता द्वारा बार-बार सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न करने के बाद भी उत्तरदाता से

सूचनाएं प्राप्त करना कभी कभी बहुत कठिन हो जाता है। किसी प्रकार वह तैयार भी हो जाता है तो एक लम्बे आकार की अनुसूची को देखकर वह पुनः अध्ययनकर्ता को टालने का प्रयत्न करता है। इसके फलस्वरूप या तो अनुसूची अपूर्ण रह जाती है अथवा उत्तरदाता से पुनः मिलने के लिए अध्ययनकर्ता को पहले से भी अधिक प्रयत्न करने पड़ते हैं।

3) अत्यधिक समय और धन की आवश्यकता - अनुसूची बहुत महँगी विधि है। अनुसूची का प्रयोग यदि अनेक अध्ययन कर्ताओं द्वारा किया जा रहा है तो ऐसे व्यक्तियों के प्रशिक्षण और वेतन पर ही बहुत अधिक धन व्यय हो जाता है। अध्ययन कार्य व्यक्तिगत रूप से होने पर प्रत्येक उत्तरदाता से सम्पर्क स्थापित करके सूचनाओं का संग्रह करने में अनेक वर्ष लग सकते हैं। जब तक सूचनाओं का संग्रह पूरा होता है तब तक आरम्भ में प्राप्त की गई सूचनाएं पुरानी पड़ जाने के कारण अक्सर अनुपयोगी हो जाती हैं। सूचनादाताओं की उदासीनता के कारण भी अनुसूची के द्वारा अध्ययन को पूर्ण करने में बहुत अधिक समय लग जाता है।

4) बड़े क्षेत्र में अनुपयुक्त - अनुसूची का उपयोग केवल एक सीमित क्षेत्र में अथवा कम संख्या वाले उत्तरदाताओं में ही किया जा सकता है। वास्तव में प्रत्येक सामाजिक घटना का क्षेत्र इतना व्यापक होता है कि यदि एक छोटे से क्षेत्र में ही अध्ययन कार्य किया जाए तो ऐसा अध्ययन अक्सर सम्पूर्ण विषय अथवा समस्या का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाता।